# काशी में द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग यात्रा

कार्यक्रम

यात्रा जाने की तिथि निश्चित कर पाँच दिन पहले भगवान के भक्तों को यात्रा जाने के लिए आमन्त्रित करना चाहिए। यह यात्रा जब मन हृदय में संकल्प उत्पन्न हो तभी यात्रा कर लेनी चाहिए। प्रातः स्नान संध्या आदि नित्यकर्म से निवृत्त होकर साथ में लेकर

मान मन्दिर घाट में जाकर स्नान व मार्जन करने के पश्चात —।

सोमनाथ जी की सविधि पूजा कर यात्रा में जाने के लिए।

आज्ञा लेकर यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए।

से दर्शन पूजन कीर्तन, हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे

मैं शिवकाञ्ची है।

काशी में द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन यात्रा
(सौराष्ट्र)
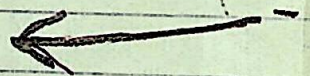
सौराष्ट्र सोमनाथाय नमः [मन्दिर नम्बर डी- १६/३४ मुहल्ला मानमन्दिर घाट]

सोमनाथ जी के दर्शन से मनोकामनाएं पूर्ण होते हैं और कार्य में विघ्न नहीं आता। मान, प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

सोमनाथ जी के दक्षिण केदारघाट में केदारेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर डी- बी ०६/१०२ में मुहल्ला केदारघाट]

केदारेश्वर के दर्शन से भक्तों के स्थूल पाप और ताप क्षीण होते हैं तथा दरिद्रता दूर होती है।

[केदारेश्वर से पश्चिम मेन पुराका माता बटुक भैरव गली में बटुक भैरव से सटे हुए पश्चिम बगल के शिव मन्दिर में घुश्मेश्वर है। घुश्मेश्वराय नमः [मकान नम्बर डी-

घुश्मेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर बी० ३१/१२६ में कामाक्षा] घुश्मेश्वर के दर्शन से रोग, कष्ट दूर होते हैं। बटुक भैरव अपने भक्तों के विघ्न संकट दूर करते हैं।

घुश्मेश्वर से पश्चिम बैजनत्था मोहल्ले में कोटलेश्वर के बगल के शिवालय में है विराजमान है।

४ बैजनाथाय नमः [मन्दिर नम्बर डी- ३७/१ में मोहल्ला

बैजनाथ

काशी में बर ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन यात्रा

कामाक्षा [वैजनाथ] ~~मखली~~ वैज

नाथ जी के दर्शन करने वाले नरनारि यों को धन पुत्र और शान्ती देते हैं।

काशीखण्डोक्त मन्दिरों का जीर्णोद्धार करके जो भक्त इनका दर्शन करता है

वह इस लोक में सब कार्य में विजयी होता ~~करता~~ है। ~~अन्त में मो~~ ~~मोक्ष~~ ~~देता है~~।

[वैजनाथ जी से उत्तर रथ यात्रा ~~सिव~~ सिगरा चौमुहानी से पश्चिम भगवान के शिव पुरा मुहल्ला में ऊपर टीला में श्री शैल मल्लिकार्जुन है।]

मल्ल टीला के शिव मन्दिर

५ मल्लिकार्जुनेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर डी ५९/५५ में

मन्दिर मुहल्ला शिवपुरा सिगरा]

मल्लीकार्जुन के पूजा करने वाले भक्तों के रोग एवं संकट को नष्ट कर देते हैं।

[मल्लिकार्जुन से पूर्व सिगरा चौमुहानी से पूर्व जाने वाले सड़क से आगे से दहिना

# काशी में १२ ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन यात्रा

~~मा~~ राम कुण्ड जाने वाली ~~सड़क~~ गली से राम कुण्ड तीर्थ के ऊपर ~~शिवालय~~ शिवालय में रामेश्वर स्थापित

रामेश्वर हैं। यह काशी में काशी ~~का~~ बास करने वाले और क्षेत्र संन्यास लेकर काशीबास करने वाले भक्तों के यह रामेश्वर हैं।। ~~वि~~ वन्दनीय है वसिष्ठ गुरुजी के आज्ञा से लंका से आने के पश्चात् रामजी ने इनको स्थापित किये थे

६ रामेश्वरायनमः [~~मन्दिर~~ नम्बर डी० ५१/४५ में मुहल्ला राम कुण्ड ]

रामेश्वर के दर्शन करने से शंकर और विष्णुजी की भक्ति प्राप्त होती है।

[जो भक्त काशी खण्डोक्त मन्दिरों का जीर्णोद्धार करके इन का दर्शन करते हैं उनके सभी विघ्न क्षयरोगादि दूर करते हैं। ~~और अन्त में मुक्ति~~ देते हैं।

[रामेश्वर से पूर्व ऊदै की चौकी व दशाश्वमेध थाना से पूर्व बंगाली के गली में ~~लोकमान्य के नाम से प्रसिद्ध है~~ त्र्यम्बकेश्वर गली में है। गोदावरी

काशी में १२ ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन यात्रा

तीर्थ इस समय में कुआ के रूप में है

पुरुषोत्तम भगवान के बगल में विराजमान है। त्र्यम्बकेश्वर त्रिलोकीनाथ के नाम से प्रसिद्ध है।

७ त्र्यम्बकेश्वराय नमः [मकान नम्बर डी० ३८/२१ में मोहल्ला हौजा कटोरा ~~बंगाली~~ ]

त्र्यम्बकेश्वर के अर्चना करनेवाले नर नारीयों के प्रति देव, ऋषि प्रसन्न होते हैं। इन के दर्शन करने वाले भक्तों को धन, धान्य देते हैं और प्रति दिन दर्शन करने वाले को शान्ति देते है। (नोट नासीक (महाराष्ट्र) मे जब महाकुम्भ पड़े उस समय भी तीर्थ (कुआ के रूप मे है)) मे स्नान कर त्र्यम्बकेश्वर का दर्शन करनी चाहिए।

[पुरुषोत्तम भगवान का दर्शन ~~के~~ ~~के~~ ~~प्रत्येक १ पक्ष को~~ ~~एवं सप्तमी~~ के दिन और पुरुषोत्तम मास भर इन के दर्शन पूजन से शिव विष्णु की मुक्ति दर्शन करनी चाहिए। [नोट जो यात्री ~~वहां जाने मे असमर्थ है पुरुषोत्तम मन्दिर मे विश्राम करते है~~ चलने मे असमर्थ है वह यात्री त्र्यम्बके (मोहल्ला हौज कटोरा)

मन्दिर में जा

श्वर के दर्शन करके घर में विश्राम करें दूसरे दिन प्रातः नित्यकर्म से निवृत होकर गम्भकेश्वर के दर्शन कर यात्रा प्रारम्भ करें।

[गम्भकेश्वर से उत्तर चौक में दागरी से उत्तर दारानगर ~~चौसट्टी~~ मुहानी से पूर्व बगल में मृत्युंजय मन्दिर

से सटा हुआ उत्तर मृत्युंजय हनुमान जी के मन्दिर से सटे हुए पूर्व बगल के शंकर जी के मन्दिर में महाकालेश्वर है। ~~कहाँ का वर्णन~~

~~ओंकारेश्वर आगे ही यात्रा में लिखा गया है।~~

(वृद्धकालेश्वर के बगल में है)

काशी में १२ ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन-यात्रा

महाकालेश्वर :

[विवरण] महामृत्युंजय के मन्दिर में प्रतिदिन दर्शन करें और विशेष प्रत्येक सोमवार, प्रदोष एवं चतुर्दशी के दिन प्रयत्न पूर्वक श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर दर्शन करें। महाकालेश्वर के दर्शन करने वाले नर-नारियों के संकट विघ्न ~~अपदाये~~ तथा कष्ट दर्शन करते ही भाग जाते हैं।

८ महाकालेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर के. ५२/३९ में मुहल्ला दारानगर] महाकालेश्वर के दर्शन करने वाले भक्तों को जन्म मृत्यु रूप संसार के भय से मुक्त करते हैं।

इन के और मृत्युंजय के (विच) ~~बिच~~ मध्ये में जो कोई मनुष्य जप-होम-अनुष्ठान और पूजा-पाठ एवं यज्ञ करते है। उनको अनन्त फल प्राप्त होता है। काशी खण्ड मे लिखा है

१. काशी में द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग यात्रा
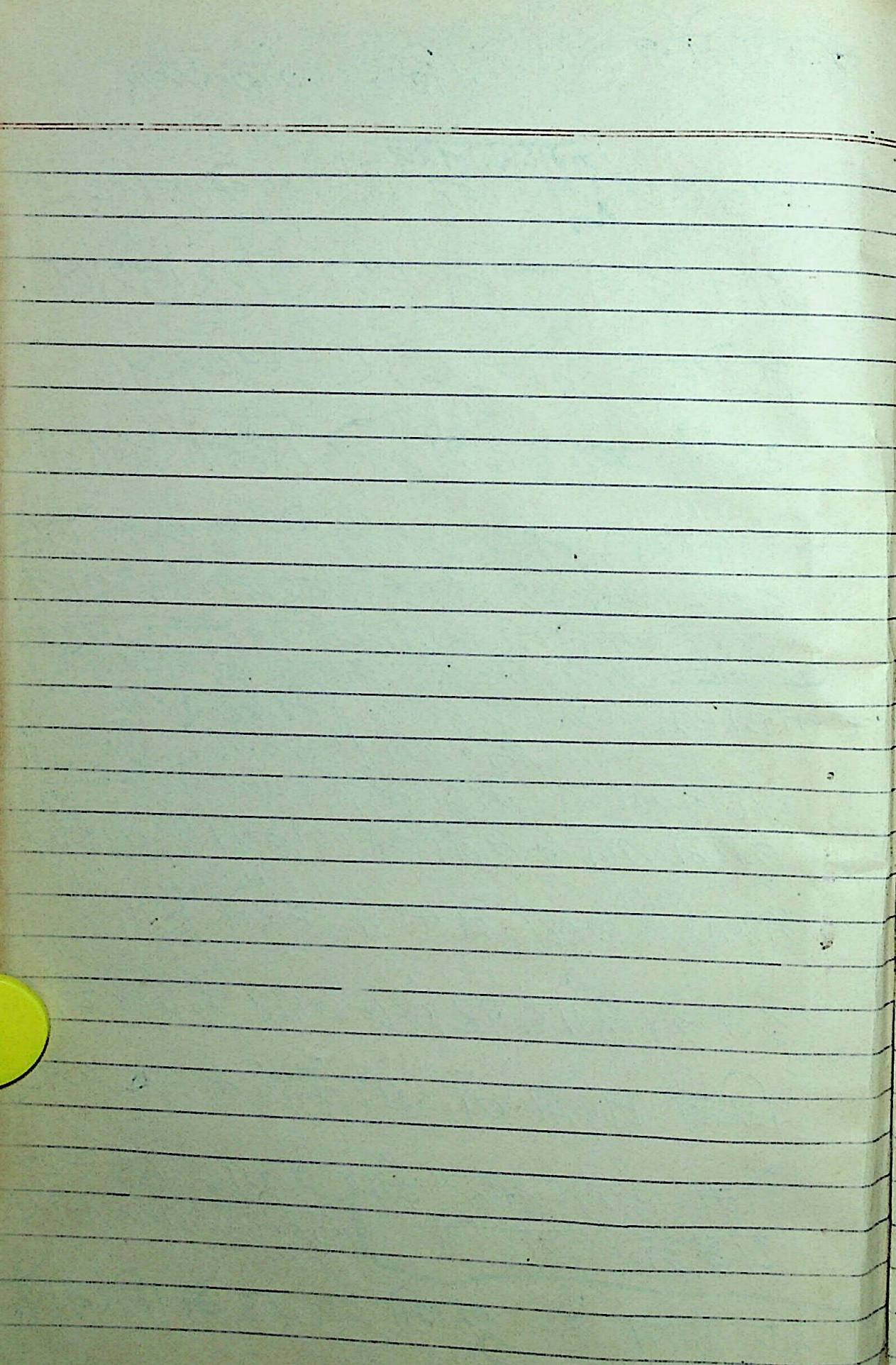
[नोट जब उज्जैन में महाकुम्भ लगता है, उस वेला में काशी की मान्दाग्नी तीर्थ धनवन्तरी तीर्थ के नाम से काशीखण्ड में एवं प्रसिद्ध है। वैशाख भर स्नान करके महाकालेश्वर के दर्शन करने से उज्जैन में जाकर दर्शन करने का फल मिलता है,

महाकालेश्वर से ओंकालेश्वर जाने का मार्ग इस प्रकार है बिश्वेश्वर, मच्छोदरी से उत्तर धितवना पुरा ~~दाहिने तरफ~~ सड़क से दाहिने तरफ ऊपर टीला के शंकर जी के मन्दिर में ओंकारेश्वर है।

ओंकारेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर ए० ३३/२३ में है मुहल्ला धितवनपुरा]

# काशी में द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग यात्रा

ओंकारेश्वर के दर्शन करने वाले
नर, नारियों के स्थूल पाप ग्रह
नक्षत्र सब शान्त होते हैं, विद्या,
मान और प्रतिष्ठा प्राप्त होता है।
ओंकारेश्वर के दक्षिण विश्वेश्वरगंज
दूध मण्डी होते हुए काल भैरव
जी का दर्शन करके काल भैरव से पूर्व
चौखम्भा, सट्टी, कपिल गली ब्रह्म-
चारिणी दुर्गा के दर्शन करके पञ्चगङ्गा
~~पञ्च में बिन्दु काञ्ची~~ में
काशी के विष्णु काञ्ची है।
बिंदु माधव विष्णु ~~के~~ भगवान
के दर्शन करके पञ्च गङ्गा से दक्षिण
राम घाट पटनी टोला होते हुए
उपशान्तेश्वर के दर्शन करके पूर्व बगल
में नागेश विनायक। के बगल में नागेश्वर है।

काशीमे १२ ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन यात्रा

१० नागेश्वरायनमः [ मुकान नम्बर सी०के० १/२१ मुहल्ला पटनी टोला ]

नागेश्वर के दर्शन से सर्प नही काटते सर्प का भय नही होता। नागेश्वर दर्शन करने वाले भक्तों को ऐश्वर्य देकर सुख एवं शान्ती प्रदान करते है।

[नागेश्वर से दक्षिण संकटा देवी जी को दर्शन कर सिद्धेश्वरी, मोद विनायक के मन्दिर में भीम सङ्कर विराज मान है। ]

११ भीम शङ्करेश्वरायनमः [ नम्बर सी०के० ३२/१३ मुहल्ला नेपाली खपड़ा ]

भीम शङ्कर के दर्शन करने वाले अपने भक्तों को शिव, शक्ति और

विष्णु भगवान की भक्ति देते है, भीम
शङ्करेश्वर से दक्षिण ज्ञानवापी तीर्थ में
मार्जन करके विश्वनाथ जी का
दर्शन करें। —

12 विश्वेश्वराय नमः [मन्दिर, नम्बर
सी० के० ३५/१[illegible]८ में है मुहल्ला
अन्नपूर्णा गली] विश्वेश्वर के
दर्शन उपासना करने वाले स्त्री पुरुषों के
पाप, रोग, संकट शान्त होते है, अन्त
में विश्वनाथ जी मुक्ति देते है।।

~~बारह सर्व दर्शन यात्रा करने वालों के~~
~~पाप, रोग, कष्ट दूर होते है, मनोवांछ~~

मनोवांछित फल पाते है। इस यात्रा में
लगभग १५० (एकसौ पचास) यात्री यात्रा
करते है। यह यात्रा एकसौ एक बार
यात्रा करने के पश्चात लिखा गया है।

काशी में ज्योतिर्लिङ्ग यात्रा

संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को दक्षिणा देकर

साधु महात्माओं को जल पान कराकर

शंकर जी का स्मरण करते हुए।

अपने-अपने घर को प्रस्थान करें। घर में

जाकर माता, पिता, गुरु आदि अपने

से बड़ों का चरण स्पर्श करके प्रणाम

करके आशीर्वाद लें।

~~हरि ॐ तत्सत. शिवार्पण मस्तु~~

~~हर हर महादेव।~~

भारत के हर कोने-कोने में जो ज्योतिर्लिङ्ग है उनके

दर्शन, पूजन करने से जो फल मिलता है।

काशी खण्ड में वेदव्यास जी लिखते है उस से

काशी के (१२) ज्योतिर्लिङ्ग यात्रा करने वाले नर नारियों

को दशगुणा अधिक फल प्राप्त होता है।

आपका ज्योतिर्लिङ्ग यात्रा पूर्ण हुई।

हरि ॐ तत्सत शिवार्पण मस्तु।

हर हर महादेव।
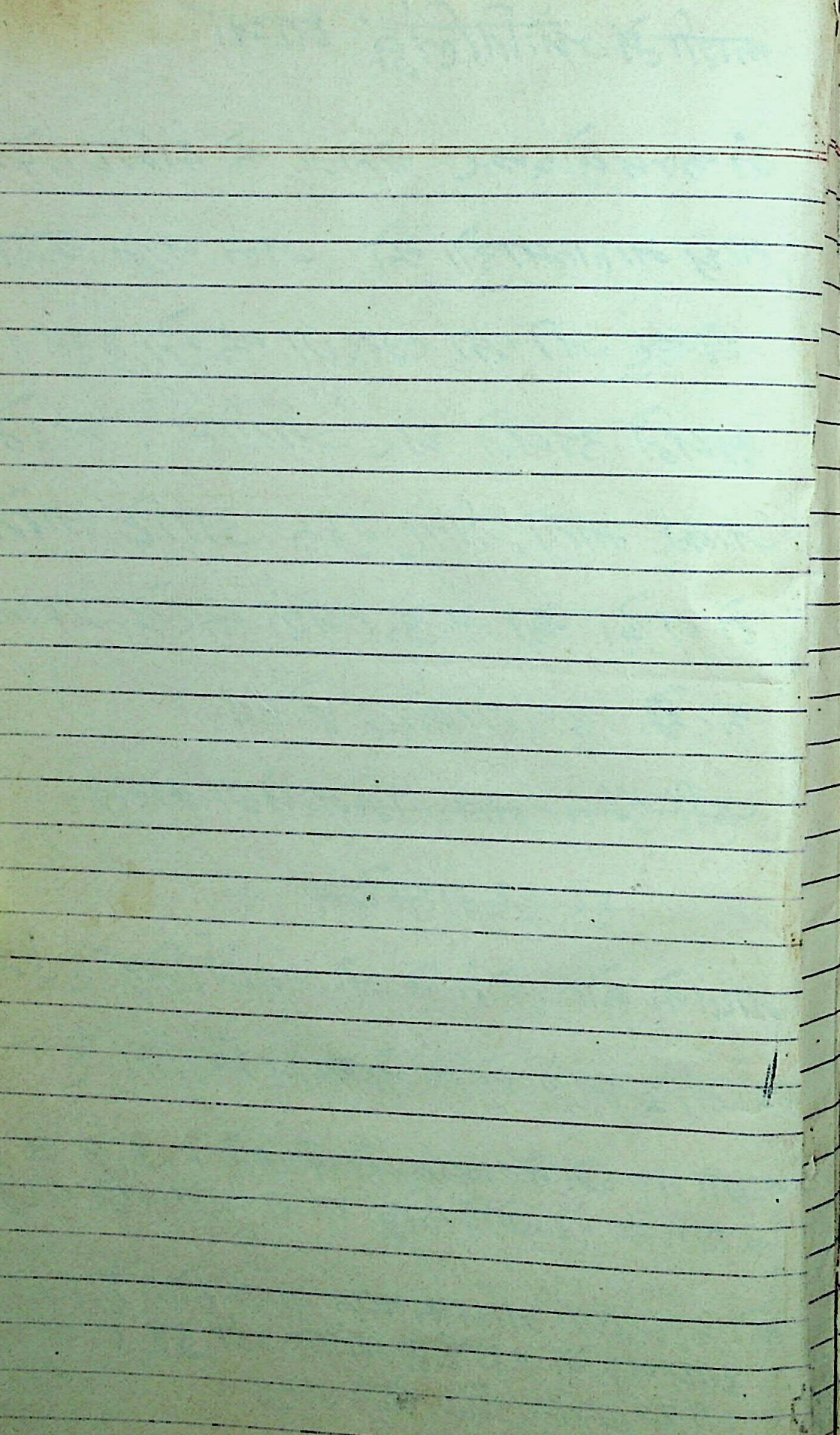
काशी में सप्तपुरी यात्रा

"काशी के सप्तपुरी यात्रा"

दाहिने वर्त से करें।

अयोध्यामथुरा माया काशीकाञ्ची ह्यवंतिका।

पुरीद्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिका: ॥

[ (काशीरहस्य अ० १३ श्लोक ]

अन्य —

काशी के सप्त पुरी यात्रा

काशी की सप्त पुरी यात्रा दाहिने
वर्त से करनी चाहिये
प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर
पूजा की सामग्री ~~साथ में लेकर~~
(पुष्प, अक्षत, कपड़ा, बिल्वपत्र,
ऋतु फल, इलायची, दाना चढ़ाने
के लिये, रेजगारी पैसा, गंगाजल,
साथ में लेकर केदार घाट में
जाकर केदारेश्वर तीर्थ में स्नान
करके केदारेश्वर के दर्शन, पूजन
करने के पश्चात आज्ञा लेकर
यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए।

केदारेश्वराय नमः [शिव कांची]

[मन्दिर नम्बर बी० ६।१०२ में मुहल्ला
केदार घाट]

रामेश्वरके

काशी के सप्त पुरी यात्रा

हरिश्चन्द्र

केदारेश्वर से दक्षिण ~~हरिश्चन्द्र~~ घाट, हनुमान घाट होते हुए काशी के अयोध्या में आज भी अयोध्या के कई मन्दिर छोटे, २ पाये जाते है, पहले अवध गर्भ की मुहल्ले में विशाल कुण्ड था सर्यू नदी के नाम से बहता था उसमे स्रोत उस समय स्रोत बहता हुआ शिवालय घाट में जाता था। आज भी सूर्यू नदी स्रोत का जल ठण्डा व मीठा शिवालय घाट में बहता है। रूरु भैरव के बगल में रामेश्वर है।

1 रामेश्वरायनमः [मन्दिर, नम्बर बी० ४/४२ मे है मुहल्ला हनुमान घाट]

3 रामेश्वर के दर्शन करने वाले

काशी के सप्तपुरी यात्रा

भक्तों को राम जी के और शिव
जी के ~~अनन्य~~ भक्ति ~~को~~ प्राप्त ~~करते हैं~~
होता है। तथा अस्तु कहन के दर्शन
करने वाले व्यक्ति को अयोध्या
जाकर ~~दर्शन कर~~ सरजू में स्नान
सम ~~और~~ दर्शन करने का फल
मिलता है। हनुमान घाट
से दक्षिण अस्सी घाट पर काशी
की माया पुरी हरी द्वार है,
अस्सी घाट में स्नान करके अस्सी
घाट के से ऊपर जो शंकर जी
के मन्दिर का दर्शन होता है।
वहीं अस्सी संगमेश्वर के
मन्दिर में माया देवी है।
12 माया देव्यै नमः [मन्दिर नम्बर

काशी के सप्तपुरी यात्रा।
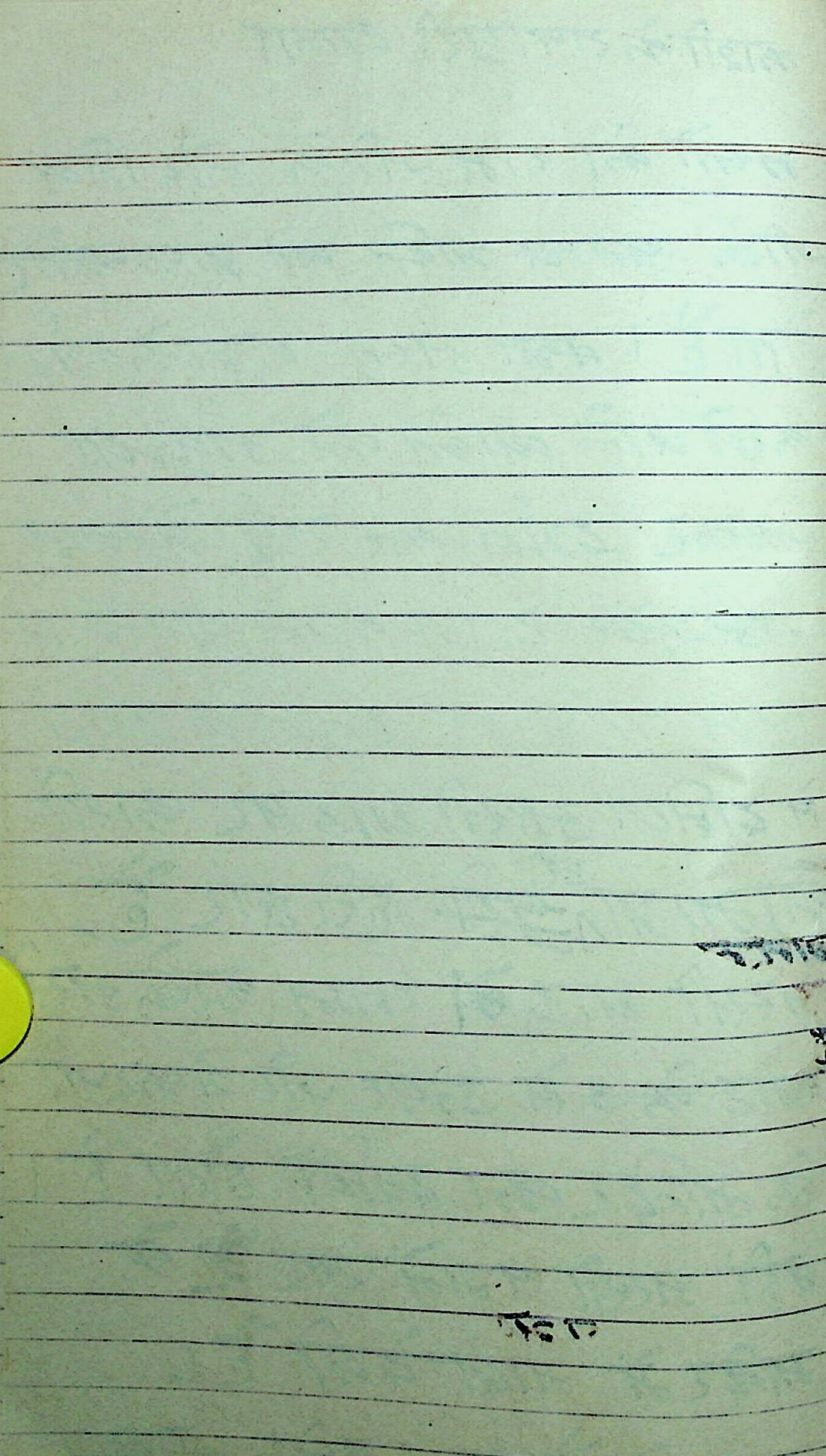
नम्बर बी० ९१/७६८ में मुहल्ला अस्सी ]
इनके दर्शन करने वाले भक्तों को
शिव, शक्ति की भक्ति (भावना प्राप्त होती) मिलती है,
और हरीद्वार में जाकर स्नान, दर्शन
करने से जो फल मिलता है वह फल
काशी के हरीद्वार में स्नान, दर्शन
करने से हरिद्वार से दश गुणा अधिक
फल मिलता है। जब हरीद्वार में महाकुम्भ लगता
उस समय काशी के हरीद्वार में स्नान दर्शन करना चाहिए। अस्सीघाट से दक्षिण
बगल में काशी की जगन्नाथपुरी है।
जगन्नाथ मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है,
यहाँ जगन्नाथ जी के मन्दिर के पास में
जगन्नाथ पुरी के सभी देवता विराज
मान है।

3 जगन्नाथ भगवानाय नमः [ मन्दिर
नम्बर . . . महल्ला अस्सी घाट ]

काशी के सप्तपुरी यात्रा
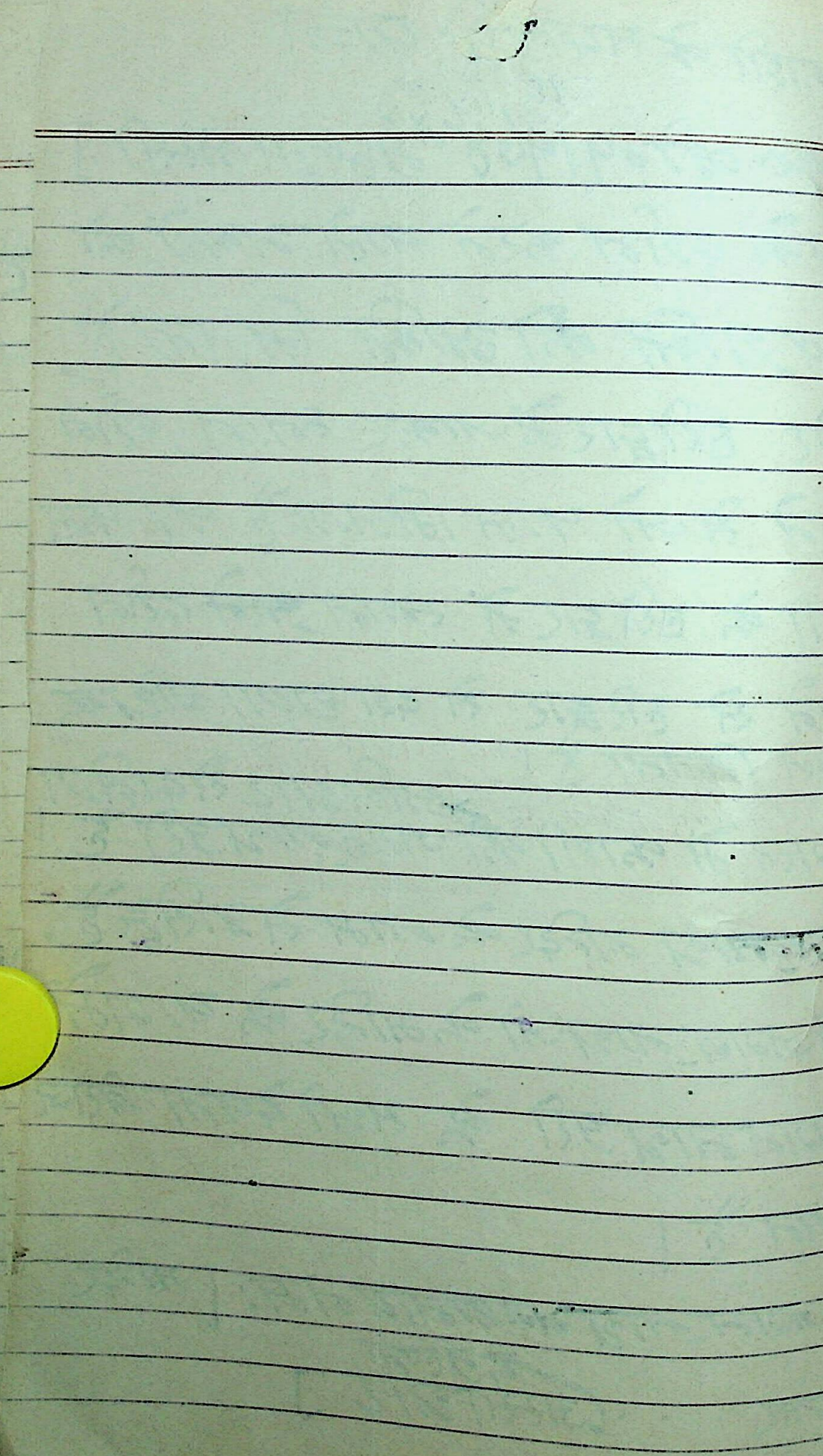
जगन्नाथ जी का दर्शन उपासना करने वाला मनुष्य को अपना और जगत का कल्याण करने की शक्ति प्राप्त करता है, परोपकार निष्ठा में सेवा करता है। उपदेश देकर सब का कल्याण करता है, स्वयं मुक्त होजाता है। पद्म पुराण के अनुसार लिखा गया।

अस्सी से दुर्गा कुण्ड कास्मिरी गंज होते हुए द्वारिकातीर्थ कुण्ड के ऊपर द्वारिकानाथ विराजमान है, यह काशी के द्वारिका है, द्वारिका तीर्थ मे स्नान कर द्वारिका तीर्थ अस्सी और तुलसी घाट के बीच का घाट द्वारिका तीर्थ है। यहाँ स्नान करके काशी के द्वारिकानाथ जी दर्शन करने से द्वारिका मे जाकर दर्शन पूजन करने का फल प्राप्त होता है। वहाँ द्वारिका पुरी के सब मन्दिर है।

6 द्वारिकानाथाय नमः [मन्दिर मकान नम्बर . . . मुहल्ला शंकर धारा। ]

पद्म पुराण मे लिखा है द्वारिकानाथ के दर्शन करने वाला प्राणी के दश जन्म के पाप

काशी के सभी पुरी वासी।
नष्ट होते हैं और वह जन्म में सुख सम्पत्ति प्राप्त करता है।

शंखुधारा से उत्तर गोदोलिया चौक, मैदागिनि, दारानगर होते हुए महामृत्युन्जय के दर्शन करके महाकालेश्वर के दर्शन करें। महाकालेश्वर से कृत्तिवासेश्वर तक का जमीन काशीखण्ड के अनुसार अवन्तीका उज्जैन है। महाकालेश्वर के आस पास, उज्जैन के देव मन्दिर है।

५ महाकालेश्वराय नमः [ मन्दिर नम्बर के ५२/३९ में है मुहल्ला दारानगर ]

महाकालेश्वर के दर्शन, पूजन, उपासना करते हैं त्रिपुण्ड लगाता है शिव शिव रटता है शिव पूजा करता है करने वाले भक्तों को काल का भी भय नहीं होता जब तक जीता रहता है तब तक आनन्द से रहता है, अन्त में महाकालेश्वर मुक्ति की भिक्षा देते है यह स्कन्द पुराण अवन्तीका अनुसार लिखा गया।

महाकालेश्वर से उत्तर गोलगड्डा शैलपुत्री होते हुए काशी मधुरा में शैल पुत्री के आस-पास का जमीन काशी का मथुरा है।

काशी के सप्तपुरी यात्रा।

शैलपुत्री देवी के मन्दिर के पास में मथुरा के देव मान्दिर है।
[शैल पुत्री देव्यै नमः]

शैल पुत्री देवी से सटे हुए उत्तर पूर्व बगल के शंकर जी के मन्दिर में मथुरेश्वर है।

मथुरेश्वराय नमः [मकान नम्बर – C. 40/11 में है मुहल्ला शैलपुत्री]
शैलेश्वराय नमः

मथुरेश्वर के दर्शन से पूजन करने वाले नर-नारियों को इन के दर्शन, पूजन करने के पश्चात मथुरा जाने की वासना समाप्त होती है। और भी यह है कि विषय वासना मनुष्यों के वासना शान्त होता है।

शैलेश्वर के दर्शन अपने भक्तों के पहाड़ के समान वासना, पाप, दुर्गुण आदि सबको शान्त कर देते है।

शैलपुत्री दुर्गा से दक्षिण वाराणसी सिटी रेलवे स्टेशन होकर गोलगड्डा – विशेश्वर गंज होते हुये काल भैरव

काशी मे सप्तपुरी यात्रा

काल भैरव जी का दर्शन कर

काल भैरव से पूर्व चौखम्भा सब्जी

मन्डी, कपिल गली होते हुए ब्रह्म-

चारिणी दुर्गा जी की दर्शन कर के

के पंचगङ्गा में बिन्दु माधव

है। काशी में बिन्दु माधव जी

के आस पास का क्षेत्र विष्णु

काञ्चि है,

बिन्दु माधवायनमः [मकान

नम्बर के० २२/३३ में मुहल्ला पञ्च
गङ्गा]

बिन्दु माधव अपने भक्तों को

शंकर भगवान और विष्णुजी

की अनन्य भक्ति देते है।

शास्त्रहीं स्कन्द पुराण में लिखा है

कि अपने भक्तों को सुख शान्ती

एवं ऐश्वर्य देकर सम्पुख रखते है।

८ सप्तपुरी यात्रा

पञ्चगङ्गा से दक्षिण मंगला गौरी, गभस्तिश्वर का दर्शन कर गभस्तिश्वर से दक्षिण रामघाट गौला गली, सिद्धेश्वरी, एवं नीलकण्ठ होते हुये ज्ञानवापी सप्तपुरियों में काशी विश्वनाथ जी के आस, पास का क्षेत्र (काशी तीर्थ मणिकर्णिका घाट में है) काशी है। अन्न-पूर्णा भवानी जी के दर्शन करने के पश्चात विश्वनाथ जी का दर्शन करें।

(१) विश्वनाथाय नमः [ मकान, नम्बर, सी० के० ३५/१९ में है मुहल्ला अन्न पूर्णा गली विश्वनाथ जी अपने दर्शन पूजन करने वाले भक्तों

काशी में सप्त पुरी यात्रा

को ऐश्वर्य देकर सुख भोगाते

है, अन्त में मोक्ष देते

है। इतना ही नहीं पद्म

पुराण, काशी खण्ड, काशी रहस्य में

लिखा है काशी में वास कर

गङ्गा स्नान करके भस्म का त्रिपुण्ड

लगा कर भैरव को चढ़ाया हुआ

प्रसाद गण्डा, रुद्राक्ष की माला

पहिन कर शिव पूजा करता हो शिव

शिव हर निश रटता हो काशी

की सभी प्रदक्षिणा यात्रा

सास्त्र विधि से स्वयं करता

हो और हजारों मनुष्यों को प्रेरणा कर

के काशी यात्रा कराता है, उसके

स्वयं वेदव्यास जी कहते है। काल

भैरव के गण आगे पीछे रक्षा एवं

सुरक्षा करते है। वह व्यक्ति यहलोक

में सुख भोग कर अन्त में अवश्य

मोक्ष प्राप्त करता है। अपने पास

भोजन की सामग्री न होतो भिक्षा मा

मधुकरी मांग कर खाकर भी काशी वास

एवं काशी ... ...
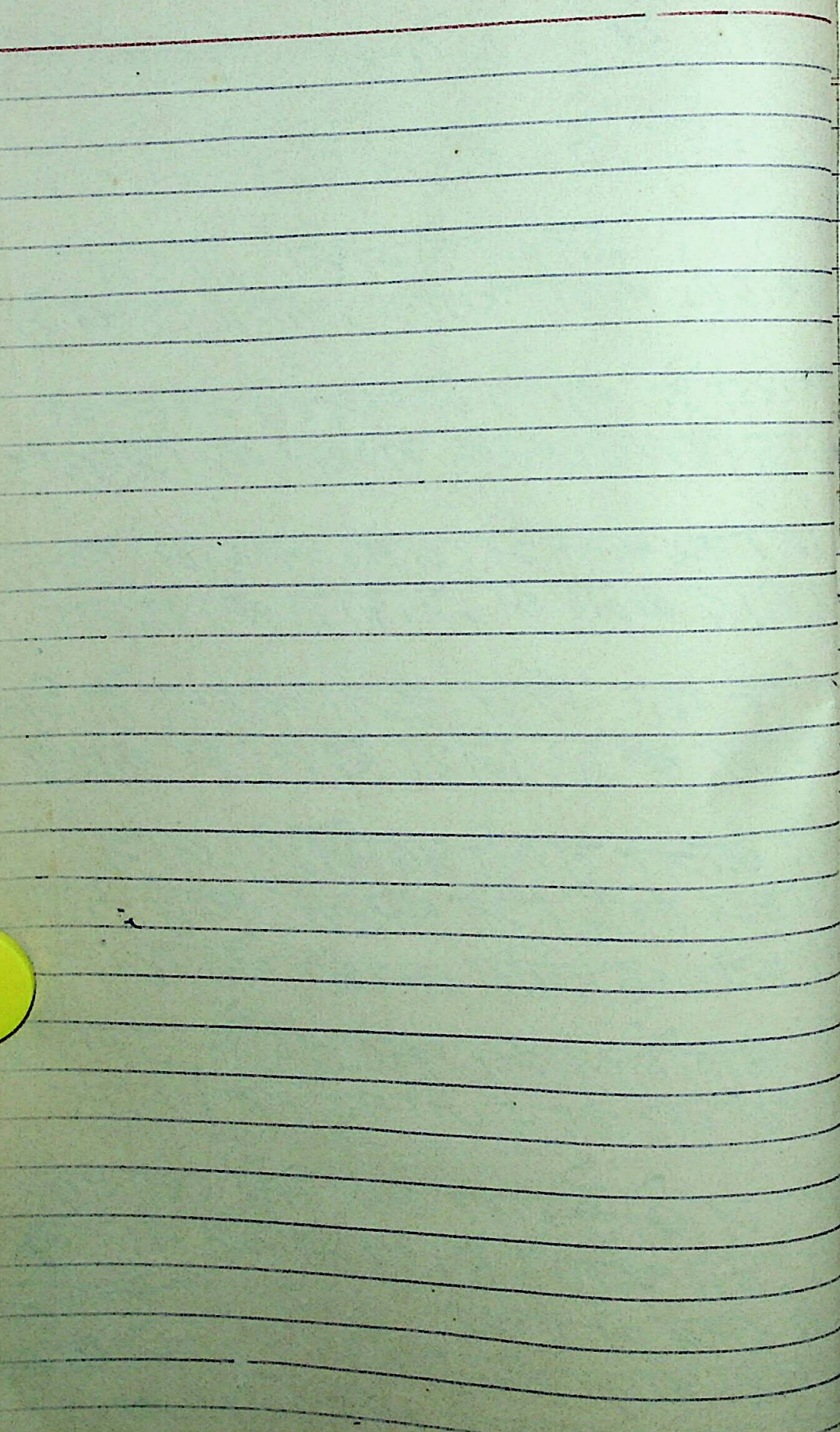
काशी में सप्तपुरी यात्रा

यात्री साधु महात्माओं को दूध, फल मिष्ठान्न आदि द्वारा जलपान कराकर दरिद्र को दरिद्र माँगने वालों को लाई, चना, पैसा, देते है। संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को यथा शक्ति दक्षिणा देकर यात्री सप्त पुरियों का स्मरण करते हुए अपने-अपने घर जाते है। पूर्व आचार्य शिव प्रसाद पाण्डेयजी लिखते है, यह यात्रा एकादश बार करने से सर्वार्थ सिद्धि प्राप्त होती है। यह यात्रा स्वयं मैंने ग्यारह बार यात्रा करने के पश्चात् लिखा गया है।

काशी में सप्त पुरी यात्रा।

हमारी काशी की परम्परा

~~कु~~ कुछ लोग प्रत्येक धाम पुरी में प्रति दिन एक एक पड़ाओं में विश्राम करते है विश्रामस्थली में सब भोजन बनाते है, भोजन करने के पश्चात् । काशी माहात्म्य काशी मोक्ष निर्णय आदि के कथा होते है, सायं संध्या करके कीर्तन भजन शिव-2 नाम जपते है ~~बहुत~~ बहुत लोग पञ्चाक्षरी महामन्त्र का जप करते है। प्रात: संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त हो कर दूसरे धाम में जाकर निवास करते है।

हर हर माहा देव ।

उपदेश

( नोट

स्कन्द पुराण - काशी माहात्म्य.

काशी रहस्य , शिवपुराण में लिखा है

जो व्यक्ति काशी में दान नहीं करता

साधु महात्मा , संन्यासियों को मधुकरी

या भिक्षा नहीं देते, बड़ों का सम्मान

नहीं करते हैं। देवताओं को एवं वर्णाश्रम

धर्म को नहीं मानने वाले और स्वधर्म का पालन नहीं करता शिव

पूजा नहीं करते, तथा दीन-दुखियों

को देख कर परोपकार नहीं करते हैं

काशी की यात्रा नहीं करते और सहयोग देकर यात्रा करने नहीं भेजते

पाप कर्म करते है। उस मनुष्य के

घर में धन संपत्ति, आज्ञाकारी

पुत्र, स्त्री होते हुये भी उस के मन

में घर में जहाँ जाता है, वहीं

उस के मन में अशान्ति (क्रोध) कलह आदि भारव गरम रहा

होता है। भैरव के गण उस व्यक्ति
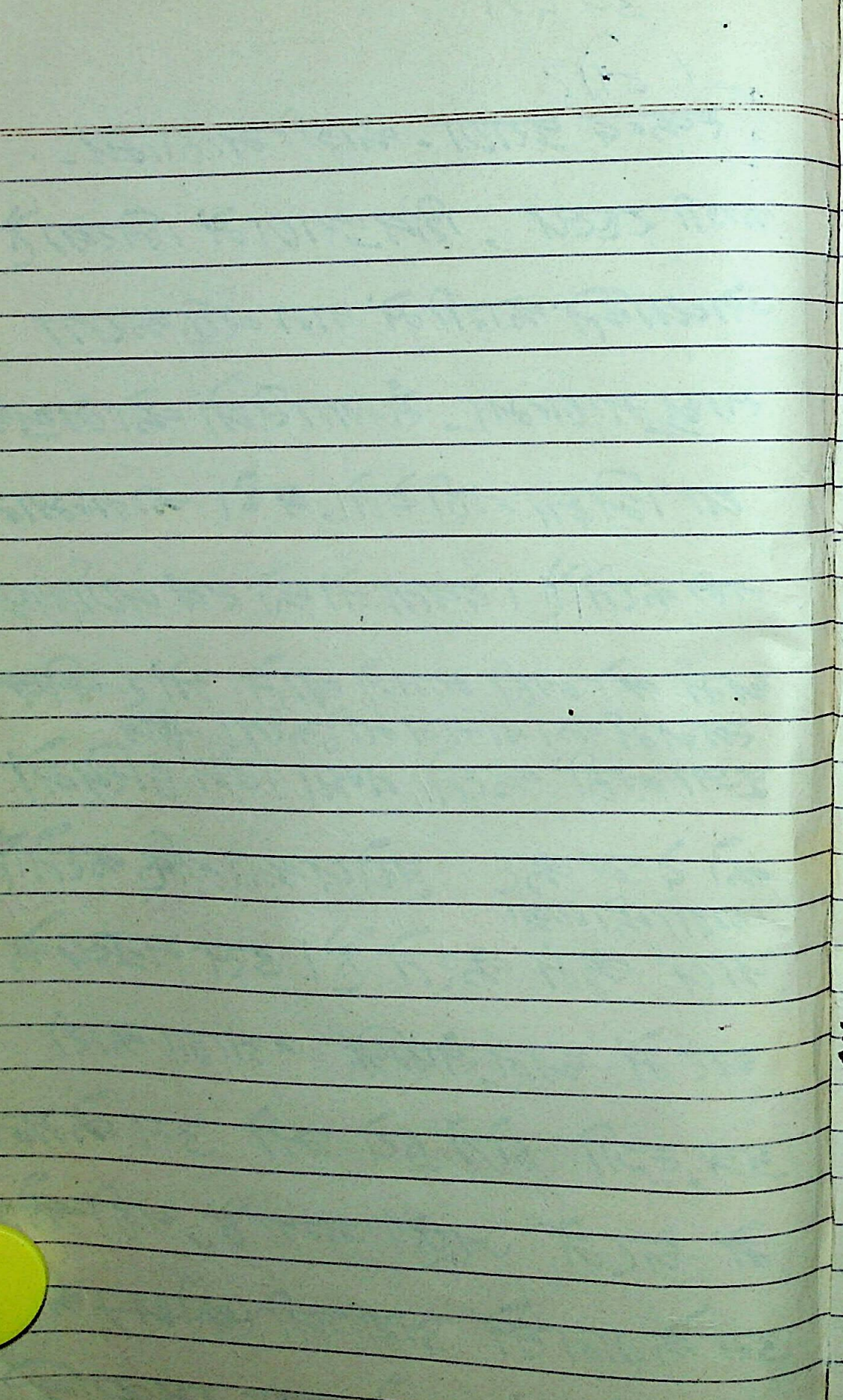
उपदेश

काशी से बाहर निकाल देते है काशी से बाहर मरकर वह व्यक्ति नरक में जाता है। क्योंकि निरोग शरीर, समय, धाम, संपत्ति, विद्या पाकर भी उसने सत्कर्म नहीं किया। उसने नाना प्रकार के कर्म करके येन-केन प्रकार से मकान, धन, जमीन घूस आदि लेकर न खाया, न खिलाया। प्यारे आत्मा भगवान के चार हाँथ है, चार हाँथ से देते है, तुम दो हाँथ से यथा शक्ति परोपकार करें।

सप्तर्षि यात्रा

काशी में ~~सप्तऋषि यात्रा~~ सप्तर्षि यात्रा।
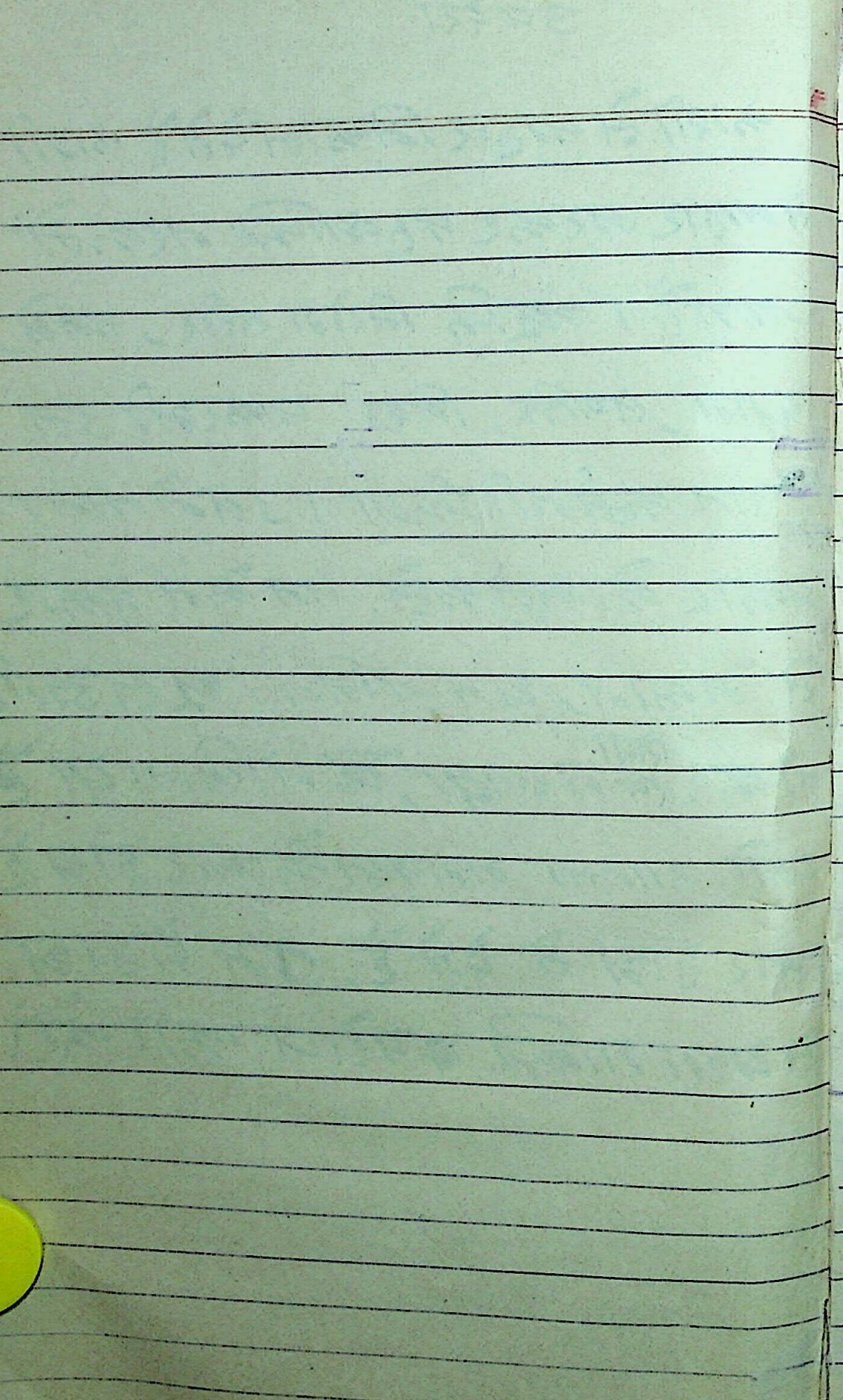
"अरण्यमेतानि त्रिङ्गानि सेवितानि शुभैर्विभिः।

मनोऽभिवाञ्छित दद्यु रिहलोके परत्र च ॥22॥ अ० १८।

अर्घ्य

सप्तर्षि

काशी के [सप्त ऋषि] यात्रा

भाद्र शुक्ल ऋषि पञ्चमी के दिन सप्त ऋषि यात्रा करनी चाहिये [प्रत्येक शुक्ल पञ्चमी के दिन भी कर सक्ते है ] प्रात: संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजा की सामग्री गङ्गाजल आदि साथ में लेकर जंगम बाड़ी में जाकर मठ में ज्योतीश्वर जंगमेश्वर दर्शन करके जंगमबाड़ी मठ के गेट से सटे हुये उत्तर बगल में सड़क से दो मन्दिरों का दर्शन होता है वहीं कश्यपेश्वर है।

1- कश्यपेश्वराय नम: [ मन्दिर नम्बर डी॰ 25/7 में है मुहल्ला जंगमबाड़ी

कश्यपेश्वर के दर्शन करने से ऋषि प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते है और दर्शन करनेवाले भक्तों की चिन्ताओं को हर लेते है।

१ काशी में सप्तर्षि यात्रा

कश्यपेश्वर से सटे हुए दक्षिण बगल के शिवालय में अङ्गिरसेश्वर है।

२- अङ्गिरसेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर डी० २५/ ५ में है मुहल्ला जंगमवाड़ी ]

अङ्गिरसेश्वर दर्शन करते ही दुःख संकट को दूर करते है। अङ्गिरसेश्वर से उत्तर गोदौलिया लक्ष्मीनारायण अस्पताल के गेट से उत्तर बगल में ~~काशी के राजा के मन्दिर~~ ~~भवन में मन्दिर में~~ ~~में~~

३ लोमसेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर डी० ३७/३३ में है मुहल्ला

काशीखण्ड पुराण में लिखा लोमसेश्वर के दर्शन पूजन करने वाले मनुष्यों के आयु बढ़ती है बल, विद्या की प्राप्ती होती है।

लोमसेश्वर से सटे हुये उत्तर बगल के शिवालय में गौतमेश्वर है।

४ गौतमेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर डी० ३७/३३ में है मुहल्ला ]

शिव पुराण में कहते है गौतमेश्वर के दर्शन करने मात्र से पितर प्रशन्न होते है-

काशी के सप्त ऋषि यात्रा

भद्र शुक्ल ऋषि पञ्चमी के दि

~~क~~ वार्षिक

काशी में सप्तर्षि यात्रा

इतना ही नहीं, पद्म पुराण में लिखा है
इन के दर्शन करते ही दृष्टी बदली,
पर मार्ग में लग जाता है, अर्थात
दृष्टी बदल जाती है।
गौतमेश्वर से उत्तर
विश्वनाथ अन्नपूर्णा जी के दर्शन
करके नीलकण्ठ मुहल्ला होते हुये।
साक्षी विनायक से सटे हुये उत्तर
बगल के शिव मन्दिर में दो शिवलिङ्ग
है पूर्व बगल का शिवलिङ्ग पुलस्तेश्वर
है पश्चिम बगल के शिवलिङ्ग है।
पुलहेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर
सी० के०
~~सी० के० ... के १६८~~ मुहल्ला
~~पुलस्तेश्वराय नमः~~ [~~...~~]]
~~पुलस्ते श्वराय~~

काशी मे सप्तर्षि यात्रा

प्रलम्बोश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर . . .
मुहल्ला

प्रलम्बोश्वर से उत्तर सेन्धिया घाट से लगा हुआ उत्तर बगल के वसिष्ठ घाट के ऊपर है।

वसिष्ठेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर
~~सी~~ सी०के० ६ । १६-१ में है मु० वसिष्ठ घाट
~~स~~ शंकटा जी]

वसिष्ठेश्वर के दर्शन करने या उपासना करने मात्र से आयु, धन और स्मरण शक्ति की वृद्धी होती है।

वसिष्ठेश्वर से ~~उ~~ उत्तर सन्तटोला ~~से~~ चौखम्भा ~~हो~~ होते हुए काल भैरव के दर्शन करके मैदागनी मद्धमेश्वर मुहल्ले में ~~मद्धमेश्वर है~~

~~मद्धमेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर~~

मद्धमेश्वर के उत्तर बगल गली में कूँवा के बगल में जमदग्नीश्वर है।

# काशी में सप्तर्षि यात्रा।

जमदग्नि मे श्वराय नमः [मन्दिर नम्बर
मुहल्ला मोहमे श्वर ]

जमदग्नेश्वर के अर्चना करने वाले भक्तो के दरिद्रता, दुःख विघ्न संकट दूर करते है।

सप्त ऋषियों की यात्रा सात बार करने वाले भक्तों के दरिद्रता, रोग, इतना ही नहीं असाध्ये कार्य भी सिद्ध होते है।

पचास बार यात्रा करने के पश्चात् लिखा गया।

शिवार्पण मस्तु।

हर हर महादेव।

---

सप्तर्षि यात्रा अन्य कहीं पुराण मे भी प्राप्त है, काशी खण्ड के श्लोक चौदसे २१ तक वर्णित है।
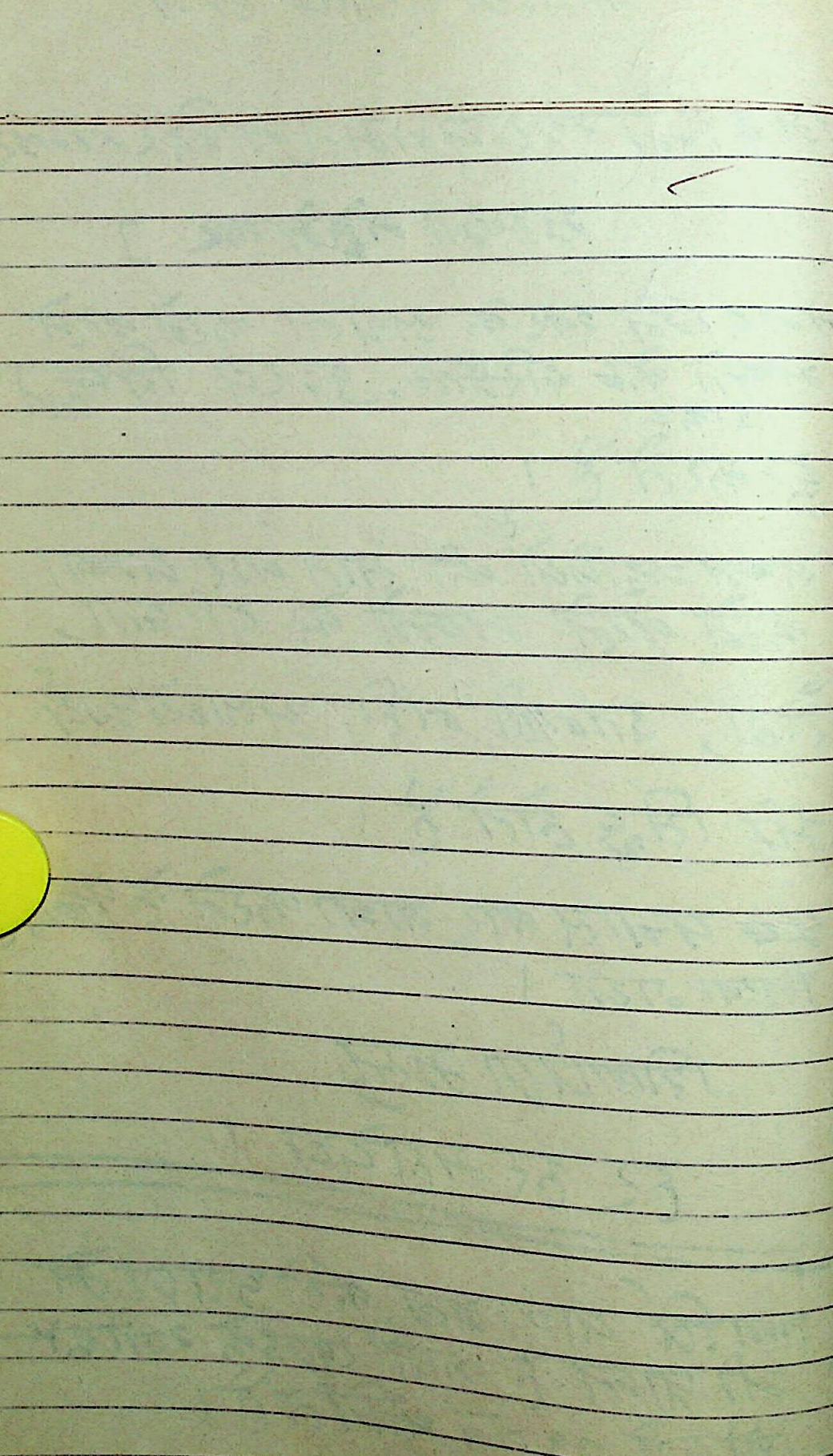
श्री हरिः

श्री मान् विष्णु अग्रवालजी
शुभाशीर्वाद
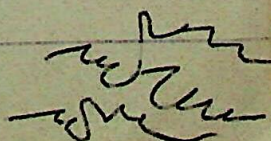
यहाँ सब आनन्द है। आप सपरिवार सहित आनन्द से होंगे।
अग्रवाल जी बहुत दिन होगया आप का कोई समाचार नही मिला न तो पत्र ही मिला मैंने एक पत्र रजीस्ट्री कर के भेजा था। उस का भी कोई उत्तर नही आया आप अपने द्वारा महीने मे २०० रुपये जो भेजते थे वह अप्रैल मई से नही आया है। मेरा स्वास्थ्य [illegible] ठीक नही है। [illegible] २०० रुपये माह का पुनः व्यवस्था करे। जहा तक हो सके जल्दी कृपा करें आप का सब व्यवस्था ठीक हो जायेगा कुछ दिनो से घर मे लक्ष्मी निवास कर रही है।

आनन्द अग्रवाल जी
शुभाशीर्वाद,
माता [illegible] आप काशी आवें तो दर्शन देने की कृपा करना

श्री हरिः

भगवतानन्द सरस्वती जी महाराज ॐ हरिः
यहाँ सब आनन्द है। आप आनन्द से होंगे।
स्वामी जी बहुत दिन होगया आपका
आशीर्वाद पत्र नही आया। अबकी बार मेरा
स्वास्थ्य ढीला चल रहा है।
आप की आशीर्वाद और कृपादृष्टी की
आवश्यकता है। जैसे आप और स्वामीजी
आपकी दर्शन की अभिलाषा है।
और आज के भवन सभी कुशल मंगल है।

(स्वामी शिवानन्द सरस्वती)

स्वामी पंच दुर्गाकुण्ड
वा/ राजघा

काशीका विश्वनाथ स्वरूपात्मक अङ्ग,
प्रत्यङ्ग, दर्शन, यात्रा

सर्वेषामपि लिङ्गानां मौलित्वं कृत्तिवाससम् ॥१६६

ओंकारेशः शिखाज्ञेया लोचनानि त्रिलोचनः ।
गोकर्णभारभूतेशौ तत्कर्णौ परिकीर्तितौ ॥१६८

विश्वेश्वराविमुक्तौ च द्वावेतौ दक्षिणौ करौ ।
धर्मेशमणिकर्णेशौ द्वौ करौ दक्षिणेतरौ ॥१६९॥

कालेश्वर कपर्दीशौ चरणावति निर्मलौ ।
ज्येष्ठेश्वरो नितंबश्च नाभिर्वै मध्यमेश्वरः ॥१७०

कपर्दोऽस्य महादेवः शिरोभूषा श्रुतीश्वर ।
चन्द्रेशो हृदयं तस्य आत्मा वीरेश्वरः परः ॥१७१॥

लिङ्गं तस्य तु केदारः शुक्रं शुक्रेश्वरं विदुः ।
अन्यानि यानि लिङ्गानि परःकोटिशतानि च ॥१७२॥

अन्यानि नरवलोमानि वपुषो भूषणान्यपि ॥१७३

[काशीखण्ड अध्याय ३३ श्लोक १६६ से १७३ तक]

विश्वनाथ स्वरूपात्मा अङ्ग सर्वाङ्ग दर्शन यात्रा। सर्व साधारण के सुविधा हेतु गुरु जी के आज्ञा से अङ्ग यात्रा दाहिने बात से लिखा गया है।
प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजन की सामग्री साथ में लेकर केदारघाट में स्नान कर के गङ्गा जल लेकर संकल्प करके यात्रा प्रारम्भ करें।

1 केदारेश्वराय नमः [लिङ्ग] [मन्दिर नम्बर बी० ६।१०२ में है मुहल्ला केदारघाट]

केदार घाट से उत्तर हरहर माहादेव सम्भो काशी विश्वनाथ गङ्गे। कीर्तन करते हुए हरिश्चन्द्र लाईन से चले गोदौलिया

विश्वनाथ अङ्ग काशी

दशाश्वमेध थाना के उत्तर बगल के देऊ गली में गोकर्णेश्वर है।

2 गोकर्णेश्वराय नमः [~~मन्दिर नम्बर~~ (दक्षिण कर्ण) मन्दिर नम्बर डी० ५० । ३३ में है मुहल्ला कुंदे की चौकी ।

गोकर्णेश्वर के दर्शन करने से सुख एवं शान्ति प्राप्त होती है। गोकर्णेश्वर से कपर्दीश्वर जाने का मार्ग इस प्रकार है गोकर्णेश्वर से नईसड़क चेतगंज थाना से पश्चिम पिशाच मोचन तीर्थ के पूर्व तट पर पिचास्य विनायक के बगल में है। पिशाच मोचन तीर्थ में मार्जन करके कपर्दीश्वर का दर्शन करें।

3 कपर्दीश्वराय नमः [ मन्दिर नम्बर ए० १३ । ३४ में है मुहल्ला पिशाच मोचन

विश्वनाथ अङ्ग यात्रा

पिशाच मोचन तीर्थ से पूर्व बेनिया बाग पार्क के दक्षिण बगल से हड़हा सराय जाने वाली गली से राजा दरवाजा के पूर्व बगल में भारभूतेश्वर गली में भारभूतेश्वर है। शिव प्रसाद शास्त्री जी के मकान के बगल में।

४ — भारभूतेश्वराय नमः (बाम कर्ण) [मन्दिर नम्बर सी० के० ५४/४४ में है मुहल्ला।

भारभूतेश्वर से उत्तर सप्तसागर में काशी देवी का दर्शन करके बगल मे ज्येष्ठेश्वर है दर्शन, पूजन अर्चना करें।

५ ज्येष्ठेश्वराय नमः [नितंब] [मन्दिर नम्बर मुहल्ला सप्त सागर] ज्येष्ठेश्वर से उत्तर मे दारानगर मध्यमेश्वर मुहल्ला भैरवेश्वर के बगल मे मध्यमेश्वर है।

६-मध्यमेश्वराय नमः [नाभी] मन्दिर नम्बर . . . . मुहल्ला मध्यमेश्वर]

विश्वनाथ अङ्क द्वारा

मध्यमेश्वर दर्शन, पूजन करने वाले व्यक्ति यों को पुत्र, धन, सम्पत्ति देकर सुख पूर्वक काशी वास कराते है।

काशी खण्ड के मन्दिरों का जीर्णोद्धार करके मध्यमेश्वर का दर्शन करते है वह व्यक्ति सर्वत्र विजयी होता है।

मध्यमेश्वर से उत्तर में मृत्युञ्जयेश्वर के दर्शन कर महाकालेश्वर का दर्शन करें।

6- महाकालेश्वराय नमः [दाधिनाचरण

मन्दिर नम्बर के० ५२/३९ मे मुहल्ला दारानगर]

महाकालेश्वर अपने दर्शन पूजन, अर्चना करने वाले भक्तों को सब सुख के सामग्री देकर सुखी रखते है, इतना ही नहीं परिवार के साथ रखते भी उन को भगवान के भक्त बना देते है।

महाकाल से दक्षिण बगल में रत्नेश्वर के मन्दिर से सटे हुए उत्तर के छोटे शंकर जी के मन्दिर में है

विश्वनाथ अङ्ग यात्रा

श्रुति स्वर है।

८- श्रुति स्वरायनमः (शिरो भूषण)

मान्दिर नम्बर के०५३।४० में है महल्ला नवघरे में २९२३
श्रुति स्वर के दर्शन करने
वाले नर नारियों को ज्ञान और ब्रह्म
विद्या प्राप्ती होता है।

रत्नेश्वर के दर्शन
कर ~~पश्चिम~~ पूर्व बगल में कृत्तिवासेश्वर सड़क
से हम दर्शन होते है।

९- कृत्तिवासेश्वरायनमः (मस्तक)

मान्दिर नम्बर के०४६।२३ में है मु० हरतीर्थ]

कृत्तिवासेश्वर ~~महलोक में आ~~ दर्शन
पूजन, उपासना करने वाले नर नारियों

को यहलोक मे आज्ञा कारी पुत्र एवं
आज्ञा कारी सिष्य, ऐश्वर्य देकर सुखी

रखते है, अन्त मे विश्वनाथ जी से
प्रार्थना करके मुक्ति दिलाते है।

कृत्तिवासेश्वर से पूर्व मच्छोदरी पार्क
से उत्तर ~~बगल~~ में छितनवन महल्ला मे

१० ओंकारेश्वरायनमः (सिखा)

मान्दिर नम्बर ए०३२।२३ में है महल्ला छितनवन पुरा]
ओंकारेश्वर अपने ~~अपने~~ दर्शन उपासना करने

वाले भक्तों को ब्रह्मज्ञान प्राप्त करातेहै।
कराते है।
ओंकारेश्वर से पूर्व त्रिलोचन घाट के उपर त्रिलोचनेश्वर है।

११ त्रिलोचनेश्वरायनमः [नेत्र ) मन्दिर नम्बर- ए० २/८० में है मुहल्ला त्रिलोचन घाट ]

त्रिलोचनेश्वर के पूर्व बगल के मोड के विनायक के मन्दिर में है

१२ आदिमहाँदेवश्वरायनमः [जटाजूट ) मन्दिर नम्बर ए० ३/ २ में है मु० त्रिलोचनघाट
इन के दर्शन अर्चना कर ने से वाले भक्तों को यहाँ सुख ।
संपत्ति देते है पर लोक में शिव लोक मे वास कराते है

त्रिलोचनेश्वर से दक्षिण काल भैरव जी के दर्शन करके चौखम्बा. सूतटोला पटनीटोला होतेहुये शान्तेश्वर संकटा जी के दर्शन करके कात्या यानी दुर्गा जी के मन्दिर में आत्माविरेश्वर है।

13 आत्मा विरेश्वराय नमः [मन)

मन्दिर नम्बर सी० के० ७/१५८ में है
मुहल्ला सिंधिया घाट ]

आत्मा विरेश्वर के दर्शन, उपासना
करने वाला स्त्री, पुरुष किसी
भी वर्ण, आश्रम में रहने वाला
व्यक्ति आत्मा ज्ञान प्राप्त करते है।
आत्मा विरेश्वर से पश्चिम सिद्धेश्वरी
के मन्दिर में चन्द्रेश्वर है।

१४ चन्द्रेश्वराय नमः [हृदय) [मन्दिर
नम्बर सी० के० ७/१२४ में है मुहल्ला
चन्द्रकूप सिद्धेश्वरी ]

चन्द्रेश्वर के दर्शन, पूजन करने वाले
मनुष्यों को चन्द्रमा के समान तेज
स्वी भी बलवान एवं बुद्धिमान पुत्र
पौत्र प्राप्त होते है।

१५ मणिकर्णिकेश्वराय नमः [दक्षिणाकर
मन्दिर नम्बर सी० के० ८/१२ में है मुहल्ला गढ़वासी
टोला ]

विश्वनाथ अङ्क यात्रा

मणिकर्णी के श्वर के दर्शन, पूजन करने वाले व्यक्ति को स्वगमा का ज्ञान होता है।

मणीकर्णीकेश्वर से दक्षिण विशालाक्षी के बगल में धर्म कूप में धर्मेश्वर है। देवो दासेश्वर के पास में है— स्कन्द पुराण में धर्मेश्वर का नाम गायत्री श्वर भी है।

१६ धर्मेश्वरायनमः (बायाँ हाथ) मन्दिर नम्बर डी०२/२१ में है मुहल्ला मीरघाट

धर्मेश्वर के दर्शन अर्चना से सत्धर्म एवं धर्म मे लग जाता है।

काशी खण्ड में लिखा है— धर्मेश्वर के पास में ब्रह्म गायत्री के जप अनुष्ठान करने वाला व्यक्ति को द्विगुणा फलप्राप्त होताहै

धर्मेश्वर से पश्चिम शुक्रकूप सृष्टि विनायक के बगल में शुक्रेश्वर है।

७ शुक्रेश्वरायनमः (वीर्य) मन्दिर नम्बर डी०८/३ मेंमुहल्ला कालीका गली)
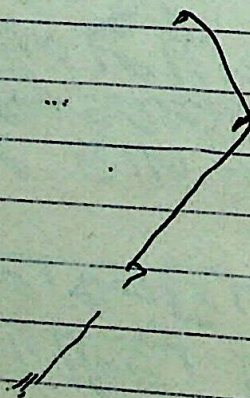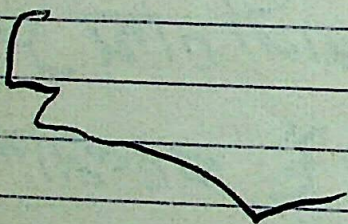
शुक्रेश्वर के दर्शन-पूजन उपासना करने वाले मनुष्यों के स्थूल शरीर सरीर निरोग रहते हैं और धन धन प्राप्त करते हैं।

शुक्रेश्वर से उत्तर ढुण्ढिराज गली में अविमुक्तेश्वर है।

अविमुक्तेश्वराय नमः [दाहिना हाथ)

मन्दिर नम्बर सी०के० . . . में है मु० ढुण्ढिराज गली]

विश्वनाथ जी चाँदी के फाटक के अन्दर सोने के मन्दिर में सोने के जलधारि के ऊपर विश्वनाथ जी विराज-मान है।

विश्वेश्वराय नमः [दाहिना हाथ)

मन्दिर नम्बर सी०के० ३५/२९ में है मुहल्ला-अन्नपूर्णा गली]

विश्वेश्वर के दर्शन करने मात्र से [illegible] नर, नारियों के पाप नष्ट होते हैं।
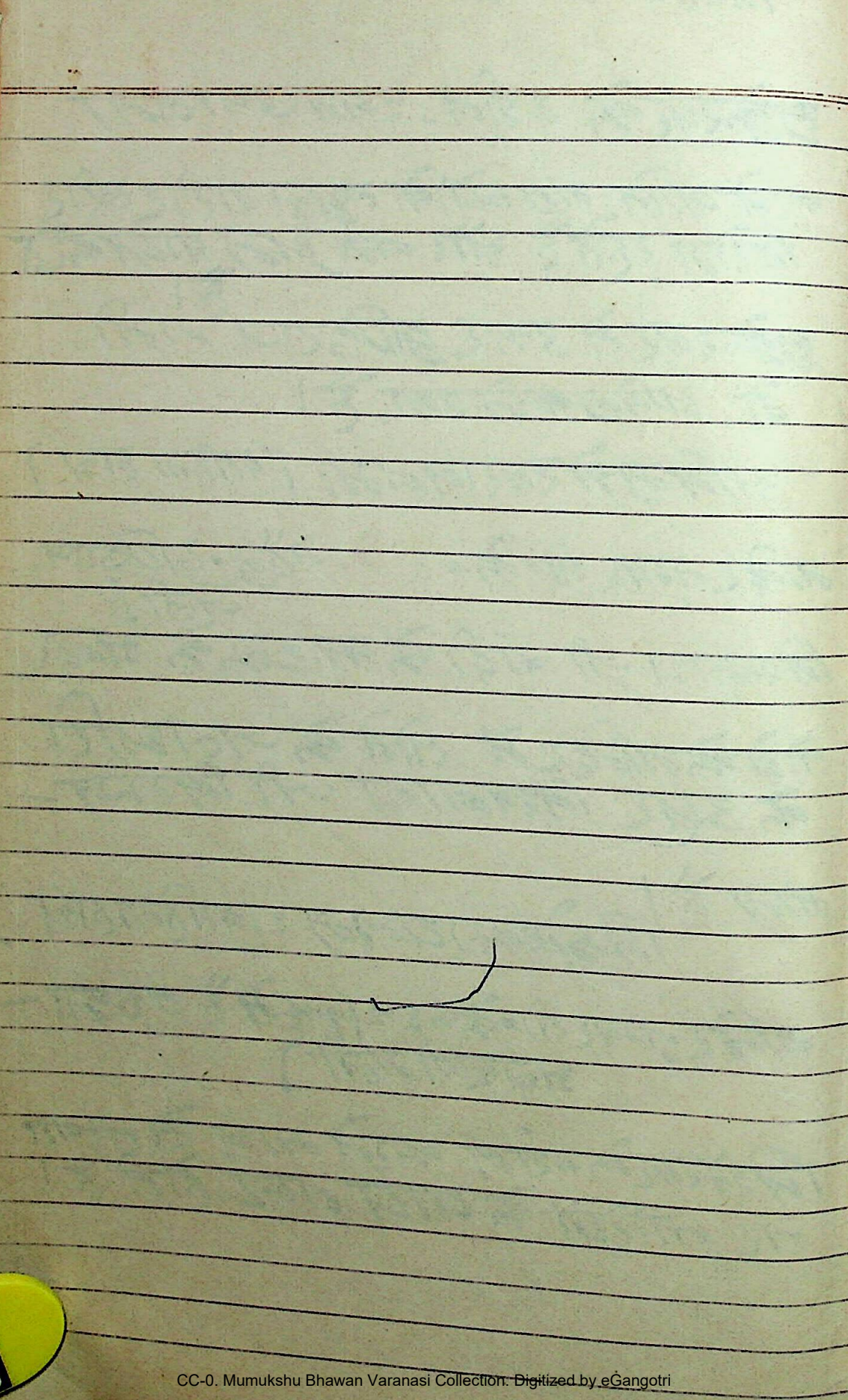
कराते है

है, और ~~संमेलन मे भाग लेने वाले~~

संमेलन मे जाकर कथा कहने वाले

कथा सुनने वाले ~~सत्संग~~

इन सब के पाप क्षीण होते है

पुण्य का उदय होता है,

विद्वानों के उपदेश को हृदये

मे धारण करके वह सब मुक्त

होजाते है। मैं इस संमेलन के

श्रोता (वक्ताओं) कार्य करताओं को आशीर्वाद

देता हूँ जिवन प्रयन्त भक्ति

सुख, शान्ति और मान

प्रतिष्ठा, संपत्ति सब को

प्राप्त हो यही मेरा आशीर्वाद

है। ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं

पूर्णात् पूर्णमुदच्यते पूर्णस्य

पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते

दूसरे दिन ~~प्रातः~~ 3, तो प्रकार योगा

परारम्भ करें।) यह यात्रा 4 पाँच

घन्टा में पूर्ण हो जाना है।

विश्वनाथ स्वरूपात्मा अड़. जलड़. यात्रा ... इस ...

... यात्रा करने के पश्चात् लिखा गया इस ...

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

विश्वनाथ अङ्ग यात्रा

विश्वनाथ स्वरूपात्मा अङ्ग प्रत्यङ्ग दर्शनयात्रा करनेवाले नर नारियों के शरीर में कोई भी अङ्ग ~~नही दुखता~~ भङ्ग नही होता हड्डी टूटने का भय नही रहता और शरीर स्वस्थ्य ~~सबल~~ रोग से रहीत होता है। इतना ही नहीं सर्व आचार्यो शीव प्रसाद पाण्डे जी लिखते है। जिन व्यक्ति के पहले हड्डी टूट गया है उनके भी यात्रा करने से जुट जाते है। तथा अङ्ग यात्रा करने वाला व्यक्ति इसलोक में निरोग रहता है, अन्त मे मुक्ति प्राप्त करता है।

[जो यात्री चलने में असमर्थ है वह यात्री महालेश्वर मे विश्राम करके दूसरे दिन ~~यात्रा~~ इसी प्रकार यात्रा परारम्भ करें।] यह यात्रा ५ पाँच घन्टा मे पूर्ण हो जाता है।

विश्वनाथ स्वरूपात्मा अङ्ग प्रत्यङ्ग यात्रा स्कन्दो एक बार यात्रा करने के पश्चात लिखा गया इस ... मैं स्कन्दो ...

शिव । शिव

विश्वनाथ अङ्ग योगा

विश्वनाथ आदि के दर्शन करने के पश्चात् विश्वनाथ-स्वरूपात्मा अङ्ग आज प्रत्यक्ष दर्शन पाया ~~आपको~~ ~~सब महा~~ आप का ~~सब~~ ~~योगा~~ पूर्ण हुआ।

संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को ~~सीधा~~ दक्षिणा देकर के साधु महात्मा संन्यासियों के

विश्वनाथ अङ्क यात्रा

मिष्ठान्न, फल आदि जल पान

कराकर विश्वनाथ जी का स्मरण

करते हुए प्रशान्तता पूर्वक

अपने-अपने घर जाकर माता

पिता एवं गुरुजी का

चरण स्पर्श कर आशीर्वाद ले सब

से मिल कर प्रेम पूर्वक भोजन

करें।

यात्रियों के पास में साधन होतो

दूसरे दिन एक से यथा शक्ति साधु ब्राह्मण

को भोजन कराना चाहिए। और

कीर्तन करनी चाहिए।
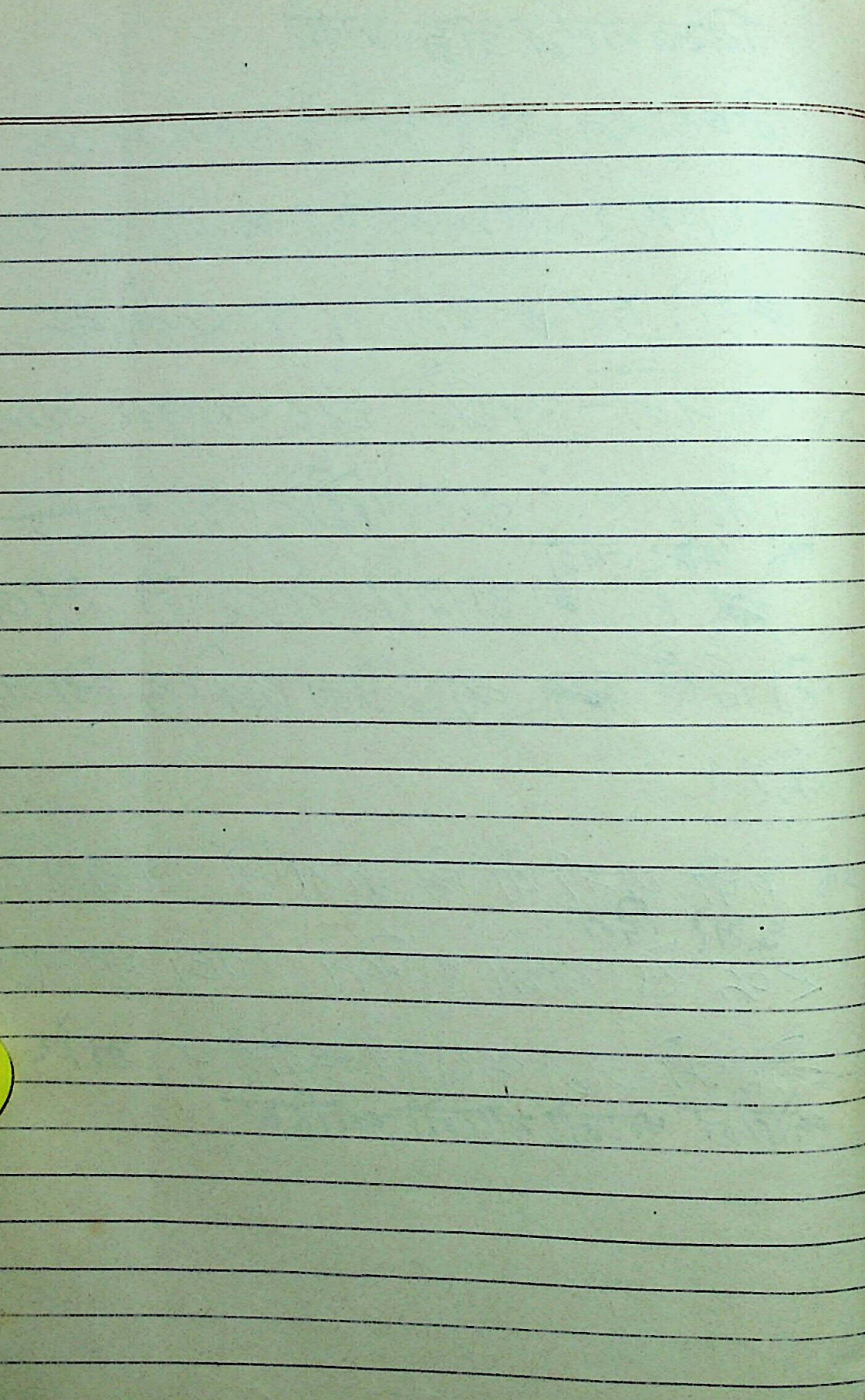
विश्वनाथ स्वरूपात्मा अङ्ग

यात्राकातर्पण इस प्रकार है।

~~५~~ अङ्ग ~~४~~ यात्रा के तर्पण करनेसे
पितर प्रशन्न होते है।

१ कृत्तीवासे श्वरायनम:
२ ओंकारेश्वरायनम:
३ त्रिलोचने श्वरायनम:
४ गोकर्णे श्वरायनम:
५ भारभूतेश्वरायनम:
६ विश्वनाथायनम:
७ अविमुक्तेश्वरायनम:
८ धर्मेश्वरायनम:
९ मणिकर्णिश्वरायनम:
१० महाकालेश्वरायनम:
११ कृपार्दिश्वरायनम:
१२ ज्येष्ठेश्वरायनम:
१३ मध्यमेश्वरायनम:
~~१४ कपार्दिश्वराय नम:~~ आविमुक्तेश्वरायनम:
१४ ~~५~~ श्रुति श्वरायनम:
१५ चन्द्रेश्वरायनम: आदिमहादेवेश्वरायनम:
१६ ~~केदारेश्वरायनम:~~
१७ आत्मेश्वरीश्वरायनम:
१८ केदारेश्वरायनम:
१९ शुक्रेश्वरायनम:

पितरों के प्रसन्नता के लिये तर्पण
करना चाहिए।

Tripathi 22/12/92

विश्वनाथ अङ्क धान्ना

हरी ओंतत्सत शिवार्पणमस्तु
हर हर माहादेव।

दूसरे सप्तर्षि दर्शन यात्रा

काशी खण्ड अध्याय १८ श्लोक १४ से २१ तक है।

काशी में चारो धाम यात्रा

जगन्नाथ पुरी का वर्णन

स्कन्द पुराण, पद्म पुराण, मत्स्य पुराण, शिव पुराण लिङ्ग पुराणों आदि में है। अस्सी घाट के दक्षिण बगल के जगन्नाथ मन्दिर में है।

जगन्नाथपुरी तीर्थाय नमः [अस्सीघाट में है
शुभद्रा तीर्थ मन्दिर — के बगल में कुप-कुआ है।

1 जगन्नाथ विष्णवे नमः [मन्दिर नम्बर बी० . . मुहल्ला जगन्नाथ पुरी अस्सी।

जगन्नाथ जी के दर्शन अर्चना करने वाले व्यक्तियों को शिव एवं विष्णु भगवान की भक्ति देते है, साथ ही दरिद्रता, अज्ञान दूर करते है।

जगन्नाथ जी से सङ्कुधारा जाने
का मार्ग इस प्रकार है अस्सी से पश्चिम
दुर्गाकुण्ड, नवाब गंज कश्मीरी गंज
होते हुए सङ्कुधारा गोपी, गोमती
द्वारिकानाथ तीर्थ में विशाल कुण्ड है
और अकुण्ड के अन्दर स्रोत है।
रुक्मणि तीर्थ मन्दिर से सटा हुआ पश्चिम में कुवां कुप है
काशी के द्वारिकापुरी का वर्णन
स्कन्द पुराण, शिव पुराण,
मत्स्य पुराण, काशी रहस्य, वाराणसी
वैभव, काशी दर्शन / अन्य में वह
वह सम्मति।
द्वारिकानाथ कृष्ण तीर्थाय नमः [
2 द्वारिका नाथ कृष्णाय नमः [मन्दिर नम्बर
बी० . . मुहल्ला सङ्कुधारा ]
द्वारिकानाथ कृष्ण जी के दर्शन आराधना
करने वाले नर, नारी को शंकर भगवान

और कृष्ण जी के ~~अवश्य~~ भक्ति प्राप्त होती है, ~~स्वनाहिं~~ नहीं अपने भक्तों को आवश्यक भोग्य पदार्थ देकर सुखी ~~रखते~~ रखते है।

सङ्कुधारा से रामेश्वर जाने का मार्ग।

यह है सङ्कुधारा से उत्तर लक्सारोड़ रामकुण्ड व रामेश्वर तीर्थ मन्दिर से सटे हुवे पश्चिम बगल में बिशाल राम कुण्ड है, सीता तीर्थ मन्दिर से सटे हुये कूँपा के रूप ~~में~~ कुप में है।

रामेश्वर का ~~प्रमा~~ प्रमाण – स्कन्द पुराण, उपनन्दी पुराण, उप गणेश पुराण ~~बाल्मी~~ वाल्मीकि रामायण, काशी माहात्म्य में उपलब्ध है।

~~है।~~

रामेश्वर तीर्थाय नमः। ~~इस तीर्थ~~

रामेश्वराय नमः: [मन्दिर नम्बर डी॰ ५४।४५ मे ~~है~~ मुहल्ला लक्सा रोड, रामकुण्ड]

ॐ रामेश्वर के दर्शन, पूजन करने
वाले स्त्री, पुरुषों को राम और विश्व
नाथ जी के भक्ति प्राप्त होती है

मद्रास के रामेश्वर में जाकर दर्शन कर
ने जो फल मिलता है, उस से
काशीखण्ड में लिखा है कि दसगुना
अधीक काशी के रामेश्वर के दर्शन
करने से फल प्राप्त होता है।

रामेश्वर से काशी के बद्री नारायण में
जाने का मार्ग यह है-
चौक, मैदागीन, गोदौलिया, मच्छोदरी होते हुये
गाये घाट संहार भैरव से गङ्गा किनारे
जानेवाली बद्री नारायण गली में

बद्रीनाराण जी का वर्णन स्कन्द पुराण,
पद्म पुराण, लिङ्ग पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण

~~बद्रि~~ नारायणतीर्थाय नमः
बद्री नारायण घाट
बाद्रिनारायणाय नमः [मन्दिर नम्बर
नरनारायणेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर
मे है मुहल्ला बद्रीनारायण
घाट/गायघाट]

बद्रीनारायण ~~तीर्थ में~~ विष्णु के दर्शन
करने वाले व्यक्ति यों को तप, दान, यज्ञ
~~सुख शान्ति~~ के ओर जगाते है।
सुख शान्ती देकर सुखी रखते है।

- बद्रीनारायण मे जाकर नर, नारायण
के दर्शन करने से जो पुण्य मिलता है
वह उससे अधिक पुण्य काशी के बद्री
नारायण भगवान के दर्शन करने से फल
पाते है। [ तर्पण
जगन्नाथ जी विष्णवे नमः -
द्वारिकानाथाय नमः, रामेश्वराय नमः, बद्रीनारा
यणाय नमः

एवं आचार्य शिवप्रशाद पाण्डेय जी
लिखते है अन्य चारो धाम यात्रा
करने से जो फल मिलता है, वही
फल काशी के चारधाम यात्रा
करने वाला व्यक्ति पाता है।

एक दिन की चारधाम यात्रा तो सभी करते है
परन्तु चैत्र शुक्ल त्रयोदशी तिथी के दिन
मण्डुवाडीह रागीस्थान की रहने वाली गीता
ब्राह्मणी काशी के चारोधाम यात्रा अपने भक्त
मण्डलियों के साथ जाती है, चार धामों मे
एक-एक रात्री भजन कीर्तन कथा श्रवण
करते हुए लग भग एक सौ यात्रीयों के साथ
प्रत्येक धाम में निवास करती है।

हर हर महादेव।

---

एक सौ आठ बार चारधाम यात्रा करने के पश्चात
यात्रा लिखा गया।

राम कुण्ड रामेश्वर डी० ५४/४५ में
महाकालेश्वर के० ५२/३९ में है
जगन्नाथ मन्दिर नम्बर डी०
प्रह्लादेश्वर सी.के. नम्बर
जमदग्नीश्वर नम्बर

औघड़ेश्वर नम्बर
मद्धमेश्वर नम्बर
अविमुक्तेश्वर नम्बर
द्वारिका सहस्रधारा नम्बर

बद्रीनारायण नम्बर.